IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 12, Issue 1, December 2020
Impact Factor: 4.819

vxzstksa dk Hkkjr esa iwoZ'k vkSj lkekftd lEcU/kksa ij izHkko

M,- mn;Hkku ;kno
vflLVsV izksQslj] fgUnh
राजकीय महिला महाविद्यालयए अम्बारी, आजमगढ़

मुगलों की सत्ता के ह्रास होने के बाद हिन्दू–मुस्लिम सम्बन्ध की दृष्टि से अंग्रेजों का भारत में आगमन एक महत्वपूर्ण घटना रही है। वैसे तो अकबर की सामंजस्यवादी नीति का परिणाम था कि उसका प्रभाव उसकी तीन पीढ़ियों तक दिखाई देता है। परन्तु औरंगजेब ने ऐसा कुछ नहीं किया उसने अपने साम्राज्य को तीन हिस्सो में बाँट दिया। डॉ0 ताराचन्द्र के शब्दों में– ''अभी तक उत्तराधिकार युद्व में राजकुमार स्वयं ही प्रतिद्वन्दी रहा करते थे, अब वे पीछे चले गये और उनके स्थान पर महत्वाकांक्षी सामंत, बड़े पदाधिकारी दलों के नेता शक्ति के असली प्रतियोगी बन गए।......... आपस के घातक संघर्ष खुलकर आरम्भ हो गए और उन्होंने साम्राज्य के विशाल आकार को नष्ट भ्रष्ट कर दिया।''[1]

मुगल साम्राज्य के पतन के कुद व्यावहारिक कारण और भी हैं। किसानों का अत्यधिक शोषण। कृषि, सामंती या अर्ध सामंती व्यवस्था पर आधारित जितने भी इहलौकिक साम्राज्य हुए हैं उनके पतन का कारण जन सामान्य का विशेष रूप से जागरूक एवं सचेत कृषक वर्ग का असंतोष ही रहा है। मुगल साम्राज्य का पतन जागीर व्यवस्था का ही परिणाम रहा है। जागीरों के हस्तांतरण ने अत्यधिक शोषण को जन्म दिया जो जमींदार और कृषक, दोनों ही वर्गों के विद्रोह का कारण बना। सभी विद्रोहों में कृषकों की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण रही। किन्तु वे स्वयं भी जाट, राजपूत, मराठा या अफगान जमींदारों और कबीला सरदारों के शोषण के शिकार हुए। फिर भी मुगलों को कृषकों के विरोध का सामना ही अधिक करना पड़ा।

डॉ0 ताराचन्द्र ने लिखा है– ''हिन्दू केवल फौजदारी के मामलों में काजियों के सामने पेश होते थे। परन्तु जहाँ तक अपराध का सम्बन्ध था, न्यायाधीशों का का काम केवल सम्बद्व व्यक्ति को अपराधी घोषित करना था उसे दिये जाने वाले दण्ड का निर्णय मुद्दई की इच्छा पर निर्भर होता था इसके अलावा बहुत से हिन्दुओं और मुसलमानों को जो गाँवो में रहते थे। गाँव में ही किए जाने वाले इंसाफ से ही संतुष्ट रहना पड़ता था जहाँ काजी सरकारी तौर पर नियुक्त नहीं होते थे।''[2]

अकबर ने शासन और जनता के बीच की दूरी को कम किया परन्तु उसके परवर्ती शासकों ने जनता को उपेक्षा की। जनता का शासन से दूर रहना केन्द्रीय सत्ता के ह्रास का एक कारण था। साम्राज्य के प्रति जनता की उदासीनता का एक दूसरा कारण भी था। सही शिक्षा का अभाव। वैज्ञानिक शिक्षा के अभाव से लोगों में सही सामाजिक और राजनीतिक चेतना का विकास नहीं हो पाया। यदि जनता की सामाजिक और राजनीतिक चेतना विकसित होती तो इनती बड़ी राजनीतिक अस्थिरता के प्रति जनता उदासीन न रहती। आपसी फूट और शासन के प्रति जनता की उदासीनता के कारण ही केन्द्रीय सत्ता का ह्रास हुआ। केन्द्रीय सत्ता कमजोर होती गयी। सामंतो और जागीरदारों ने बिना किसी नियंत्रण के जोर शोर से जनता का शोषण किया और जनता लगातार बोझ से दबती चली गयी। औरगंजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतन तेजी से आरम्भ हो गया। मुगल दरबार सरदारो के बीच गुटबाजी का अड्डा बन गया था। मराठों के हमले दकन से लेकर साम्राज्य के हृदय–देश

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 12, Issue 1, December 2020 Impact Factor: 4.819

गंगा के मैदान तक होने लगे थे। जब 1739ई0 में नादिर शाह ने मुगल सम्राट को बन्दी बनाकर दिल्ली को लूटा तो साम्राज्य की कमजोरी जग जाहिर हो गयी।

मध्य कालीन भारत की आर्थिक शक्तियाँ भी कुछ हद तक उसका कारण थी। जहाँ तक उत्पादन की बात है तो उस समय उत्पादन तो बढ़ता जा रहा था परन्तु कुछ कारणों से ठहराव आ गया मिट्टी की उर्वरता के चुकते जाने के साथ उत्पादकता में कमी आई। तथा इसके लिए नए साधन उपलब्ध नहीं थे। भूराजस्व की दर भारी थी। ग्रामीण भूमिहीनों और गरीब किसानों के पास अपने बल–बूते पर नए गाँव बसाने या परती जमीन को आबाद करने के लिए न तो आवश्यक पूँजी थी और न प्रबन्ध कुशलता। प्रो0 सतीश चन्द्र के शब्दो में– ''उत्पादन तो धीरे–धीरे बढ़ा परन्तु शासक वर्गो की माँगे और अपेक्षाएँ बहुत तेजी से बढ़ी उदाहरण के लिए जहाँगीर की गद्दीनशीनी के समय 1605ई0 में मनसबदारों की संख्या 2069 थी, 1637ई0 में शाहजहाँ के शासन काल में बढ़कर 8000 हो गयी और औरंगजेब के शासन काल के उत्तरार्ध में 11450 हो गई। इस तरह मुगल सरदारों की संख्या में पाँच गुनी वृद्वि हुई। राजस्व वृद्वि हुई परन्तु खास अनुपात में नहीं, खासतौर से जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल में, जबकि साम्राज्य का खास विस्तार हुआ ही नहीं।''[3]

ऊपर से शाहजहाँ ने भव्य निर्माण के दौर की शुरूआत कर दी। मुगल अमीर पहले से ही इतनी मोटी तनख्वाह पा रहे थे कि जिसकी दुनिया में कोई सानी नहीं थी। उनके ऐशो आराम में वृद्वि हुई यद्यपि बहुत से मुगल सरदार पत्यक्ष रूप से या उनकी ओर से काम करने वाले व्यापारियों के माध्यम से परोक्ष रूप से वाणिज्य – व्यापार में भी भाग लेते थे, लेकिन इससे उन्हें थोड़ी बहुत आमदनी ही होती थी और अब उनकी आय का मुख्य जरिया भूमि ही थी। उनकी समस्याएं इसलिए और गंभीर हो गयीं कि सत्रहवीं सदी के पूर्वाद्ध में कीमतों में लगभग दुगुनी वृद्वि हो गयी। इस प्रकार जागीरों से ज्यादा से ज्यादा धन ऐंठने की कोशिशे और बहुधा गैर कानूनी कोशिशें के फलस्वरूप ग्रामीण समाज के सभी अन्तर्विरोध सतह पर आ गाए। कहीं किसानों के बीच असंतोष भड़का तो कहीं जमीदारों के नेतृत्व में विद्रोह हुए और कहीं–कहीं स्थानीय स्तर के स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लेने के प्रयत्न किए गए। इस प्रकार देखें तो मुगल साम्राज्य का पतन और विघटन में आर्थिक परिस्थिति भी बहुत हद तक जिम्मेदार थीं।

केन्द्रीय सत्ता के ह्रास होने के बाद भारत में यूरोपीय शक्तियों का विस्तार हो रहा था। लगातार यूरोपीय शक्तियाँ भारत में अपनी स्थिति मजबूत करती जा रही थीं। इसमें अंग्रेजी शक्ति एक महत्वपूर्ण शक्ति थी, जिसका प्रभाव भारत की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर स्पष्ट दिखाई देता हैं अंग्रेजों का भारत में प्रवेश उस समय हुआ जब भारत की स्थिति डॉवाँडोल थी। यहाँ के शासक और सामन्तों की स्वतंत्र रियासतें बन गई थीं। मराठों और पठानों ने अलग विद्रोह का डंका बजा दिया था। अंग्रेजों ने यहाँ की आपसी फूट का लाभ उठाया और व्यापार के साथ अपनी सत्ता स्थापित करने की बात भी सोची, इन लोगों ने सामंतों से मिलकर फूट डाला और लाभ उठाकर अपना शासन–कायम किया। कार्ल मार्क्स ने लिखा है– ''मुगल बादशाह के सार्वभौम प्रभुत्व को मुगल सूबेदारों ने तोड़ा, यानी बादशाह ने जिन्हें सूबों की देखभाल के लिए नियुक्त किया था वे वहाँ के स्वतंत्र शासक बन गए। सूबेदारों की शक्ति को मराठों ने तोड़ा और मराठो की शक्ति को पठानो ने तोड़ा, और जब सब आपस में गुत्थमगुत्था हो रहे थे, तब अंग्रेज भीतर घुस आए और, सबके ऊपर हावी हो गए।'' [4]

सन् 1600ई0 में इस्ट इण्डिया कम्पनी स्थापित हुई थी और सन् 1757 में प्लासी की लड़ाई हुयी थी। प्लासी की लड़ाई में मीरजाफर की गद्दारी से क्लाइव बंगाल पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफल हो गया। प्लासी की लड़ाई का दिन ही

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 12, Issue 1, December 2020 Impact Factor: 4.819

भारत वर्ष पर अंग्रेजों की प्रभुत्व स्थापना का दिन है। भारत में जब तक केन्द्रीय सत्ता मौजूद थी। तब तक कोई भी विदेशी शक्ति यहाँ अपना पैर फैलाने में असमर्थ रही। केन्द्रीय सत्ता के कमजोर होते ही अंग्रेजो ने यहाँ के सामंतो से मिलकर, उनकी फूट से लाभ उठाकर यहाँ की जातियों के विकास को रोका प्रजा की गरीबी से लाभ उठाकर उसे फौज में भरती किया और अपनी कूटनीति से भारतीयों के बल से ही भारतवर्ष पर कब्जा किया। प्लासी की लड़ाई के बाद भारतवर्ष में अंग्रेजी राज तेजी से फैला और मजबूती से कायम हो गया। जिसका प्रभाव बाद में हिन्दू–मुस्लिम सम्बन्धों पर भी नकारात्मक ही पड़ा वह प्रभाव स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान ही दिखायी पड़ता है।

I UnHk' xUFk

[1]. डॉ0 ताराचन्द्र– भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास पृ0– 53

[2]. डॉ0 तारा चन्द्र– भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, पृ0– 131

[3]. प्रो0 सतीश चन्द्र– मध्यकालीन भारत – एन0सी0इ0आर0टी0– सन् 1990 पृ0– 351

[4]. डॉ0 रामविलास शर्मा– भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद द्वितीय खण्ड– पृ0– 165